

# سُورَةُ طه

Surah 20 — Taa-Haa (Taa-Haa) · Meccan · 135 Ayahs · Translation: Hindi

1

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ طه

ऐ ता हा (रसूलअल्लाह)

2

مَا أَنزَلْنَا عَلَيْكَ الْقُرْآنَ لِتَشْقَىٰ

हमने तुम पर कुरान इसलिए नाज़िल नहीं किया कि तुम (इस क़दर) मशक्कत उठाओ

3

إِلَّا تَذْكِرَةً ۚ لِّمَن يَخْشَىٰ

मगर जो शख्स खुदा से डरता है उसके लिए नसीहत (करार दिया है)

4

تَنزِيلًا ۚ مِّمَّنْ خَلَقَ الْأَرْضَ وَالسَّمُوتِ الْعُلَىٰ

(ये) उस शख्स की तरफ़ से नाज़िल हुआ है जिसने ज़मीन और ऊँचे-ऊँचे आसमानों को पैदा किया

5

الرَّحْمَنُ عَلَى الْعَرْشِ اسْتَوَىٰ

वही रहमान है जो अर्श पर (हुक्मरानी के लिए) आमादा व मुस्तईद है

6

لَهُ ۚ مَا فِي السَّمُوتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَمَا تَحْتَ الثَّرَىٰ

जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है और जो कुछ दोनों के बीच में है और जो कुछ ज़मीन के नीचे है (गरज़ सब कुछ) उसी का है

7

وَإِنْ تَجَهَّرَ بِالْقَوْلِ فَإِنَّهُ ۚ يَعْلَمُ السِّرَّ وَأَخْفَىٰ

और अगर तू पुकार कर बात करे (तो भी आहिस्ता करे तो भी) वह यक़ीनन भेद और उससे ज्यादा पोशीदा चीज़ को जानता है

8

اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ ۖ لَهُ الْأَسْمَاءُ الْحُسْنَىٰ

अल्लाह (वह माबूद है कि) उसके सिवा कोई माबूद नहीं है (अच्छे-अच्छे) उसी के नाम हैं

9

وَهَلْ أَتَاكَ حَدِيثُ مُوسَىٰ

और (ऐ रसूल) क्या तुम तक मूसा की खबर पहुँची है कि जब उन्होंने दूर से आग देखी

10

إِذْ رَأَىٰ نَارًا ۖ فَقَالَ لِأَهْلِهِ امْكُثُوا ۖ إِنِّي آنَسْتُ نَارًا ۖ اَلْعَلَىٰ ءَاتِيكُمْ مِنْهَا بِقَبَسٍ أَوْ أَجْدٍ عَلَىٰ النَّارِ هُدًى

तो अपने घर के लोगों से कहने लगे कि तुम लोग (ज़रा यहीं) ठहरो मैंने आग देखी है क्या अजब है कि मैं वहाँ (जाकर) उसमें से एक अंगारा तुम्हारे पास ले आऊँ या आग के पास किसी राह का पता पा जाऊँ

11

فَلَمَّا أَتَاهَا نُودِيَ يُمُوسَىٰ

फिर जब मूसा आग के पास आए तो उन्हें आवाज आई

12

إِنِّي أَنَا ۖ رَبُّكَ فَاخْلَعْ نَعْلَيْكَ ۖ إِنَّكَ بِالْوَادِ الْمُقَدَّسِ طُوًى

कि ऐ मूसा बेशक मैं ही तुम्हारा परवरदिगार हूँ तो तुम अपनी जूतियाँ उतार डालो क्योंकि तुम (इस वक्त) तुआ (नामी) पाक्रीज़ा चटियल मैदान में हो

13

وَأَنَا اخْتَرْتُكَ فَاسْتَمِعْ لِمَا يُوحَىٰ

और मैंने तुमको पैगम्बरी के वास्ते मुन्तख़िब किया (चुन लिया) है तो जो कुछ तुम्हारी तरफ़ वही की जाती है उसे कान लगा कर सुनो

14

إِنِّي أَنَا اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنَا ۖ فَاعْبُدْنِي وَأَقِمِ الصَّلَاةَ لِذِكْرِي

इसमें शक नहीं कि मैं ही वह अल्लाह हूँ कि मेरे सिवा कोई माबूद नहीं तो मेरी ही इबादत करो और मेरी याद के लिए नमाज़ बराबर पढ़ा करो

15

إِنَّ السَّاعَةَ آتِيَةٌ أَكَادُ أُخْفِيهَا لِيُجْزَىٰ كُلُّ نَفْسٍ بِمَا تَسْعَىٰ

(क्योंकि) क़यामत ज़रूर आने वाली है और मैं उसे लामहौला छिपाए रखूँगा ताकि हर शख्स (उसके ख़ौफ से नेकी करे) और वैसी कोशिश की है उसका उसे बदला दिया जाए

16

فَلَا يَصُدُّكَ عَنْهَا مَنْ لَا يُؤْمِنُ بِهَا وَاتَّبَعَ هَوَاهُ فَتَرْدَىٰ

तो (कहीं) ऐसा न हो कि जो शख्स उसे दिल से नहीं मानता और अपनी नफ़सियानी ख्वाहिश के पीछे पड़ा वह तुम्हें इस (फिक्क) से रोक दे तो तुम तबाह हो जाओगे

17

وَمَا تِلْكَ بِيَمِينِكَ يُمُوسَىٰ

और ऐ मूसा ये तुम्हारे दाहिने हाथ में क्या चीज़ है

18

قَالَ هِيَ عَصَايَ أَتَوَكَّوْا؟ عَلَيْهَا وَأَهْشُوا بِهَا عَلَىٰ غَنَمِي وَلِيَ فِيهَا مَآرِبُ أُخْرَىٰ

अर्ज़ की ये तो मेरी लाठी है मैं उस पर सहारा करता हूँ और इससे अपनी बकरियों पर (और दरख्तों की) पत्तियाँ झाड़ता हूँ और उसमें मेरे और भी मतलब हैं

19

قَالَ أَلْقَهَا يُمُوسَىٰ

फ़रमाया ऐ मूसा उसको ज़रा ज़मीन पर डाल तो दो मूसा ने उसे डाल दिया

20

فَأَلْقَاهَا فَإِذَا هِيَ حَيَّةٌ تَسْعَىٰ

तो फ़ौरन वह साँप बनकर दौड़ने लगा (ये देखकर मूसा भागे)

21

قَالَ خُذْهَا وَلَا تَخَفْ ۚ سَنُعِيدُهَا سِيرَتَهَا الْأُولَىٰ

तो फ़रमाया कि तुम इसको पकड़ लो और डरो नहीं मैं अभी इसकी पहली सी सूरत फिर किए देता हूँ

22

وَأَضْمُمُ يَدَكَ إِلَى جَنَاحِكَ تَخْرُجَ بَيِّضًا مِّنْ غَيْرِ سُوءٍ ؕ ءَايَةٌ أُخْرَىٰ

और अपने हाथ को समेट कर अपने बगल में तो कर लो (फिर देखो कि) वह बग़ैर किसी बीमारी के सफेद चमकता दमकता हुआ निकलेगा ये दूसरा मौजिज़ा है

23

لِنُرِيكَ مِنْ ءَايَاتِنَا الْكُبْرَىٰ

(ये) ताकि हम तुमको अपनी (कुदरत की) बड़ी-बड़ी निशानियाँ दिखाएँ

24

أَذْهَبْ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ إِنَّهُ طَغَىٰ

अब तुम फिरऔन के पास जाओ उसने बहुत सर उठाया है

25

قَالَ رَبِّ اشْرَحْ لِي صَدْرِي

मूसा ने अर्ज़ की परवरदिगार (मैं जाता तो हूँ)

26

وَيَسِّرْ لِي أَمْرِي

मगर तू मेरे लिए मेरे सीने को कुशादा फरमा

27

وَأَحْلُلْ عُقْدَةً مِّنْ لِّسَانِي

और दिलेर बना और मेरा काम मेरे लिए आसान कर दे और मेरी ज़बान से लुकनत की गिरह खोल दे

28

يَفْقَهُوا قَوْلِي

ताकि लोग मेरी बात अच्छी तरह समझें और

29

وَأَجْعَلْ لِّي وَزِيرًا مِّنْ أَهْلِي

मेरे कीनेवालों में से मेरे भाई हारून

30

هَرُونَ أَخِي

को मेरा वज़ीर बोझ बटाने वाला बना दे

31

أَشْدُّ بِهِ أَزْرِي

उसके ज़रिए से मेरी पुश्त मज़बूत कर दे

32

وَأَشْرِكُهُ فِي أَمْرِي

और मेरे काम में उसको मेरा शरीक बना

33

كَيْ نُسَبِّحَكَ كَثِيرًا

ताकि हम दोनों (मिलकर) कसरत से तेरी तसबीह करें

34

وَنَذْكُرَكَ كَثِيرًا

और कसरत से तेरी याद करें

35

إِنَّكَ كُنْتَ بِنَا بَصِيرًا

तू तो हमारी हालत देख ही रहा है

36

قَالَ قَدْ أُوتِيتَ سُؤْلَكَ يُمُوسَىٰ

फ़रमाया ऐ मूसा तुम्हारी सब दरखास्तें मंज़ूर की गई

37

وَلَقَدْ مَنَّا عَلَيْكَ مَرَّةً أُخْرَىٰ

और हम तो तुम पर एक बार और एहसान कर चुके हैं

إِذْ أَوْحَيْنَا إِلَىٰ أُمِّكَ مَا يُوحَىٰ

जब हमने तुम्हारी माँ को इलहाम किया जो अब तुम्हें "वही" के ज़रिए से बताया जाता है

أَنِ اقْذِفِيهِ فِي التَّابُوتِ فَاقْذِفِيهِ فِي الْيَمِّ فَلْيُلْقِهِ الْيَمُّ بِالسَّاحِلِ يَأْخُذْهُ عَدُوٌّ لِّي وَعَدُوٌّ لَّهُ ۖ ۚ وَأَلْقَيْتُ عَلَيْكَ مَحَبَّةً مِّنِّي وَلِتُصْنَعَ عَلَىٰ عَيْنِي

कि तुम इसे (मूसा को) सन्दूक में रखकर सन्दूक को दरिया में डाल दो फिर दरिया उसे ढकेल कर किनारे डाल देगा कि मूसा को मेरा दुश्मन और मूसा का दुश्मन (फिरऔन) उठा लेगा और मैंने तुम पर अपनी मोहब्बत को डाल दिया जो देखता (प्यार करता) ताकि तुम मेरी खास निगरानी में पाले पोसे जाओ

إِذْ تَمْشِي أُخْتُكَ فَتَقُولُ هَلْ أَدُلُّكُمْ عَلَىٰ مَن يَكْفُلُهُ ۖ ۚ فَرَجَعْنَاكَ إِلَىٰ أُمِّكَ كَيْ تَقَرَّ عَيْنُهَا وَلَا تَحْزَنَ ۖ ۚ وَكَتَلْتِ نَفْسًا ۖ ۚ فَانْجَيْنَاكَ مِنَ الْغَمِّ وَفَتَنَّاكَ فُتُونًا ۖ ۚ فَلَبِثْتَ سِنِينَ فِي أَهْلِ مَدْيَنَ ثُمَّ جِئْتَ عَلَىٰ قَدَرٍ ۖ ۚ يَمْوَسَىٰ

(उस वक्त) जब तुम्हारी बहन चली (और फिर उनके घर में आकर) कहने लगी कि कहो तो मैं तुम्हें ऐसी दाया बताऊँ कि जो इसे अच्छी तरह पाले तो (इस तदबीर से) हमने फिर तुमको तुम्हारी माँ के पास पहुँचा दिया ताकि उसकी आँखें ठन्डी रहें और तुम्हारी (जुदाई पर) कुढ़े नहीं और तुमने एक शख्स (क्रिबती) को मार डाला था और सख्त परेशान थे तो हमने तुमको (इस) गम से नजात दी और हमने तुम्हारा अच्छी तरह इम्तिहान कर लिया फिर तुम कई बरस तक मदन के लोगों में जाकर रहे ऐ मूसा फिर तुम (उम्र के) एक अन्दाजे पर आ गए नबूवत के कायल हुए

وَأَصْطَفَيْنَاكَ لِنَفْسِي

और मैंने तुमको अपनी रिसालत के वास्ते मुन्तखिब किया

أَذْهَبَ أَنتَ وَأَخُوكَ بِأَيْتِي وَلَا تَنِيَا فِي ذِكْرِي

तुम अपने भाई समेत हमारे मौजिजे लेकर जाओ और (देखो) मेरी याद में सुस्ती न करना

أَذْهَبَا إِلَىٰ فِرْعَوْنَ إِنَّهُ طَغَىٰ

तुम दोनों फिरऔन के पास जाओ बेशक वह बहुत सरकश हो गया है

فَقُولَا لَهُ ۖ قَوْلًا لَّيِّنًا ۖ لَّعَلَّهُ ۖ يَتَذَكَّرُ أَوْ يَخْشَىٰ

फिर उससे (जाकर) नरमी से बातें करो ताकि वह नसीहत मान ले या डर जाए

قَالَا رَبَّنَا إِنَّنَا نَخَافُ أَنْ يَفْرُطَ عَلَيْنَا أَوْ أَنْ يَطْغَىٰ

दोनों ने अर्ज की ऐ हमारे पालने वाले हम डरते हैं कि कहीं वह हम पर ज्यादाती (न) कर बैठे या ज्यादा सरकशी कर ले

قَالَ لَا تَخَافَا ۖ إِنَّنِي مَعَكُمَا أَسْمَعُ وَأَرَىٰ

फरमाया तुम डरो नहीं मैं तुम्हारे साथ हूँ (सब कुछ) सुनता और देखता हूँ

فَأْتِيَاهُ فَقُولَا إِنَّا رَسُولَا رَبِّكَ فَأَرْسِلْ مَعَنَا بَنِي إِسْرَءِيلَ وَلَا تُعَذِّبْهُمْ ۖ قَدْ جِئْنَاكَ  
بِآيَةٍ ۖ مِّنْ رَبِّكَ ۖ وَالسَّلَامُ عَلَىٰ مَنْ أَتْبَعَ الْهُدَىٰ

गरज़ तुम दोनों उसके पास जाओ और कहो कि हम आप के परवरदिगार के रसूल हैं तो बनी इसराइल को हमारे साथ भेज दीजिए और उन्हें सताइए नहीं हम आपके पास आपके परवरदिगार का मौजिज़ा लेकर आए हैं और जो राहे रास्त की पैरवी करे उसी के लिए सलामती है

إِنَّا قَدْ أُوحِيَ إِلَيْنَا أَنَّ الْعَذَابَ عَلَىٰ مَنْ كَذَّبَ وَتَوَلَّىٰ

हमारे पास खुदा की तरफ से ये "वही" नाज़िल हुई है कि यकीनन अज़ाब उसी शख्स पर है जो (खुदा की आयतों को) झुठलाए

قَالَ فَمَنْ رَّبُّكُمَا يَمُوسَىٰ

और उसके हुक्म से मुँह मोड़े (गरज़ गए और कहा) फिरऔन ने पूछा ऐ मूसा आखिर तुम दोनों का परवरदिगार कौन है

قَالَ رَبُّنَا الَّذِي أَعْطَىٰ كُلَّ شَيْءٍ خَلْقَهُ ۖ ثُمَّ هَدَىٰ

मूसा ने कहा हमारा परवरदिगार वह है जिसने हर चीज़ को उसके (मुनासिब) सूरत अता फरमाई

51

قَالَ فَمَا بَالُ الْقُرُونِ الْأُولَىٰ

फिर उसी ने ज़िन्दगी बसर करने के तरीके बताए फिरऔन ने पूछा भला अगले लोगों का हाल (तो बताओ) कि क्या हुआ

52

قَالَ عَلِمَهَا عِنْدَ رَبِّي فِي كِتَابٍ ۚ لَا يَضِلُّ رَبِّي وَلَا يَنْسَىٰ

मूसा ने कहा इन बातों का इल्म मेरे परवरदिगार के पास एक किताब (लौहे महफूज़) में (लिखा हुआ) है मेरा परवरदिगार न बहकता है न भूलता है

53

الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ مَهْدًا ۖ وَسَلَكَ لَكُمْ فِيهَا سُبُلًا ۚ وَأَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً ۚ فَأَخْرَجْنَا بِهِ ۙ أَزْوَاجًا ۚ مِنْ نَبَاتٍ ۚ شَتَّىٰ

वह वही है जिसने तुम्हारे (फ़ायदे के) वास्ते ज़मीन को बिछौना बनाया और तुम्हारे लिए उसमें राहें निकाली और उसी ने आसमान से पानी बरसाया फिर (खुदा फरमाता है कि) हम ही ने उस पानी के ज़रिए से मुख्तलिफ़ किस्मों की घासे निकाली

54

كُلُوا ۚ وَارْعَوْا ۚ أَنْعِمَكُمْ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ ۚ لِأُولِي الْأَلْبَابِ

(ताकि) तुम खुद भी खाओ और अपने चारपायों को भी चराओ कुछ शक नहीं कि इसमें अक्लमन्दों के वास्ते (कुदरते खुदा की) बहुत सी निशानियाँ हैं

55

مِنْهَا خَلَقْنَكُمْ وَفِيهَا نُعِيدُكُمْ وَمِنْهَا نُخْرِجُكُمْ تَارَةً أُخْرَىٰ ۚ

हमने इसी ज़मीन से तुम को पैदा किया और (मरने के बाद) इसमें लौटा कर लाएँगे और उसी से दूसरी बार (क़यामत के दिन) तुमको निकाल खड़ा करेंगे

56

وَلَقَدْ أَرَيْنَاهُ آيَاتِنَا كُلَّهَا فَكَذَّبَ وَأَبَىٰ

और मैंने फिरऔन को अपनी सारी निशानियाँ दिखा दी

57

قَالَ أَجِئْتَنَا لِتُخْرِجَنَا مِنْ أَرْضِنَا بِسِحْرِكَ يَمُوسَىٰ

इस पर भी उसने सबको झुठला दिया और न माना (और) कहने लगा ऐ मूसा क्या तुम हमारे पास इसलिए आए हो

فَلَنَأْتِيَنَّكَ بِسِحْرٍ ۖ مِّثْلِهِ ۚ فَاجْعَلْ بَيْنَنَا وَبَيْنَكَ مَوْعِدًا ۖ لَا نُخْلِفُهُ ۚ نَحْنُ وَلَا أَنْتَ  
مَكَانًا ۚ سَوَاءٌ ي

कि हम को हमारे मुल्क (मिस्र से) अपने जादू के ज़ोर से निकाल बाहर करो अच्छा तो (रहो) हम भी तुम्हारे सामने ऐसा जादू पेश करते हैं फिर तुम अपने और हमारे दरमियान एक वक्त मुकर्रर करो कि न हम उसके खिलाफ करे और न तुम और मुकाबला एक साफ़ खुले मैदान में हो

قَالَ مَوْعِدُكُمْ يَوْمَ الزَّيْنَةِ وَأَنْ يُحْشَرَ النَّاسُ ضُحًى ۖ

मूसा ने कहा तुम्हारे (मुकाबले) की मीयाद ज़ीनत (ईद) का दिन है और उस रोज़ सब लोग दिन चढ़े जमा किए जाएँ

فَتَوَلَّىٰ فِرْعَوْنُ فَجَمَعَ كَيْدَهُ ۚ ثُمَّ أَتَىٰ

उसके बाद फिरऔन (अपनी जगह) लौट गया फिर अपने चलत्तर (जादू के सामान) जमा करने लगा

قَالَ لَهُم مُّوسَىٰ وَيْلَكُمْ لَا تَفْتَرُوا ۚ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا ۖ فَيُسْحِتَكُمْ بِعَذَابٍ ۚ وَقَدْ  
خَابَ مَنْ افْتَرَىٰ

फिर (मुकाबले को) आ मौजूद हुआ मूसा ने (फिरऔनियों से) कहा तुम्हारा नास हो खुदा पर झूठी-झूठी इफ्तेरा परदाज़ियाँ न करो वरना वह अज़ाब (नाज़िल करके) इससे तुम्हारा मटियामेट कर छोड़ेगा

فَتَنَزَّعُوا ۚ أَمْرُهُمْ بَيْنَهُمْ وَأَسْرُوا ۚ النَّجْوَىٰ

और (याद रखो कि) जिसने इफ्तेरा परदाज़ियाँ न की वह यकीनन नामुराद रहा उस पर वह लोग अपने काम में बाहम झगड़ने और सरगोशियाँ करने लगे

قَالُوا ۚ إِنَّ هَٰذِهِ لَسُحْرُنِ يُرِيدَانِ أَنْ يُخْرِجَاكُم مِّنْ أَرْضِكُمْ بِسِحْرِهِمَا وَيَذْهَبَا  
بِطَرِيقَتِكُمُ الْمُثْلَىٰ

(आखिर) वह लोग बोल उठे कि ये दोनों यकीनन जादूगर हैं और चाहते हैं कि अपने जादू (के ज़ोर) से तुम लोगों को तुम्हारे मुल्क से निकाल बाहर करें और तुम्हारे अच्छे खासे मज़हब को मिटा छोड़ें

فَأَجْمِعُوا ۚ كَيْدَكُمْ ثُمَّ اتُّبُوا ۚ صَفًّا ۚ ا ۚ وَقَدْ أَفْلَحَ الْيَوْمَ مَنْ أَسْتَعْلَىٰ

तो तुम भी खूब अपने चलत्तर (जादू वगैरह) दुरुस्त कर लो फिर परा (सफ़) बाँध के (उनके मुक़ाबले में) आ पड़ो और जो आज डर रहा हो वही फायज़ुलहराम रहा

قَالُوا ۚ يَمُوسَىٰ إِمَّا أَنْ تُلْقَىٰ وَإِمَّا أَنْ نَكُونَ أَوَّلَ مَنْ أَلْقَىٰ

गरज़ जादूगरों ने कहा (ऐ मूसा) या तो तुम ही (अपने जादू) फेंको और या ये कि पहले जो जादू फेंके वह हम ही हों

قَالَ بَلْ أَلْقُوا ۚ ۚ فَإِذَا حِبَالُهُمْ وَعِصِيُّهُمْ يُخَيَّلُ إِلَيْهِ مِنْ سِحْرِهِمْ أَنَّهَا تَسْعَىٰ

मूसा ने कहा (मैं नहीं डालूँगा) बल्कि तुम ही पहले डालो (गरज़ उन्होंने अपने करतब दिखाए) तो बस मूसा को उनके जादू (के जोर से) ऐसा मालूम हुआ कि उनकी रस्सियाँ और उनकी छड़ियाँ दौड़ रही हैं

فَأَوْجَسَ فِي نَفْسِهِ ۚ خِيفَةً ۚ مُوسَىٰ

तो मूसा ने अपने दिल में कुछ दहशत सी पाई

قُلْنَا لَا تَخَفْ إِنَّكَ أَنْتَ الْأَعْلَىٰ

हमने कहा (मूसा) इस से डरो नहीं यकीनन तुम ही वर रहोगे

وَأَلْقِ مَا فِي يَمِينِكَ تَلْقَفْ مَا صَنَعُوا ۚ ۚ إِنَّمَا صَنَعُوا ۚ كَيْدُ سَحَرٍ ۚ ۚ وَلَا يُفْلِحُ  
السَّاحِرُ حَيْثُ أَتَىٰ

और तुम्हारे दाहिने हाथ में जो (लाठी) है उसे डाल तो दो कि जो करतब उन लोगों ने की है उसे हड़प कर जाए क्योंकि उन लोगों ने जो कुछ करतब की वह एक जादूगर की करतब है और जादूगर जहाँ जाए कामयाब नहीं हो सकता

فَأَلْقَى السَّحَرَةُ سُجَّدًا ۚ ا ۚ قَالُوا ۚ ءَامَنَّا بِرَبِّ هَارُونَ وَمُوسَىٰ

(गरज़ मूसा की लाठी ने) सब हड़प कर लिया (ये देखते ही) वह सब जादूगर सजदे में गिर पड़े (और कहने लगे) कि हम मूसा और हारून के परवरदिगार पर ईमान ले आए

قَالَ ءَامَنْتُمْ لَهُ؟ قَبْلَ أَنْ ءَاذَنَ لَكُمْ؟ إِنَّهُ؟ لَكَبِيرُكُمُ الَّذِي عَلَّمَكُمُ السِّحْرَ؟  
فَلَأُقَطِّعَنَّ أَيْدِيَكُمْ وَأَرْجُلَكُمْ مِّنْ خَلْفٍ؟ وَلَأُصَلِّبَنَّكُمْ فِي جُذُوعِ النَّخْلِ وَلَتَعْلَمُنَّ أَيُّنَا  
أَشَدُّ عَذَابًا؟! وَأَبْقَى

फिरऔन ने उन लोगों से कहा (हाए) इससे पहले कि हम तुमको इजाज़त दें तुम उस पर ईमान ले आए इसमें शक नहीं कि ये तुम सबका बड़ा (गुरू) है जिसने तुमको जादू सिखाया है तो मैं तुम्हारा एक तरफ़ के हाथ और दूसरी तरफ़ के पाँव ज़रूर काट डालूँगा और तुम्हें यक़ीनन खुरमे की शाखों पर सूली चढ़ा दूँगा और उस वक्त तुमको (अच्छी तरह) मालूम हो जाएगा कि हम (दोनों) फरीकों से अज़ाब में ज्यादा बढ़ा हुआ कौन और किसको क़याम ज्यादा है

قَالُوا؟ لَنْ نُؤْثِرَكَ عَلَىٰ مَا جَاءَنَا مِنَ الْبَيِّنَاتِ وَالَّذِي فَطَرَنَا؟ فَاقْضِ مَا أَنْتَ  
قَاضٍ؟ إِنَّمَا تَقْضِي هَذِهِ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا

जादूगर बोले कि ऐसे वाजेए व रौशन मौजिज़ात जो हमारे सामने आए उन पर और जिस (खुदा) ने हमको पैदा किया उस पर तो हम तुमको किसी तरह तरजीह नहीं दे सकते तो जो तुझे करना हो कर गुज़र तो बस दुनिया की (इसी ज़रा) ज़िन्दगी पर हुकूमत कर सकता है

إِنَّا ءَامَنَّا بِرَبِّنَا لِيَغْفِرَ لَنَا خَطِئَنَا وَمَا أَكْرَهْتَنَا عَلَيْهِ مِنَ السِّحْرِ؟ وَاللَّهُ خَيْرٌ  
وَأَبْقَى

(और कहा) हम तो अपने परवरदिगार पर इसलिए ईमान लाए हैं ताकि हमारे वास्ते सारे गुनाह माफ़ कर दे और (खास कर) जिस पर तूने हमें मजबूर किया था और खुदा ही सबसे बेहतर है

إِنَّهُ؟ مَن يَأْتِ رَبَّهُ؟ مُجْرِمًا؟! فَإِنَّ لَهُ؟ جَهَنَّمَ لَا يَمُوتُ فِيهَا وَلَا يَحْيَىٰ

और (उसी को) सबसे ज्यादा क़याम है इसमें शक नहीं कि जो शख्स मुजरिम होकर अपने परवरदिगार के सामने हाज़िर होगा तो उसके लिए यक़ीनन जहन्नुम (धरा हुआ) है जिसमें न तो वह मरे ही गा और न ज़िन्दा ही रहेगा

وَمَنْ يَأْتِهِ؟! مُؤْمِنًا؟! قَدْ عَمِلَ الصَّالِحَاتِ فَأُو؟! لِّكَ لَهُمُ الدَّرَجَاتُ الْعُلَىٰ

(सिसकता रहेगा) और जो शख्स उसके सामने ईमानदार हो कर हाज़िर होगा और उसने अच्छे-अच्छे काम भी किए होंगे तो ऐसे ही लोग हैं जिनके लिए बड़े-बड़े बुलन्द रूतबे हैं

جَنَّتْ عَدْنٌ ۚ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خُلِدِينَ فِيهَا ۚ وَذَلِكَ جَزَاءُ مَنْ تَزَكَّى

वह सदाबहार बाग़ात जिनके नीचे नहरें जारी हैं वह लोग उसमें हमेशा रहेंगे और जो गुनाह से पाक व पाकीज़ा रहे उस का यही सिला है

وَلَقَدْ أَوْحَيْنَا إِلَىٰ مُوسَىٰ أَنْ أَسْرِ بِعِبَادِي فَاصْرِبْ لَهُمْ طَرِيقًا ۚ فِي الْبَحْرِ يَبَسًا ۚ لَا تَخَفْ دَرَكًا ۚ وَلَا تَخْشَىٰ

और हमने मूसा के पास "वही" भेजी कि मेरे बन्दों (बनी इसराइल) को (मिस्र से) रातों रात निकाल ले जाओ फिर दरिया में (लाठी मारकर) उनके लिए एक सूखी राह निकालो और तुमको पीछा करने का न कोई खौफ़ रहेगा न (डूबने की) कोई दहशत

فَاتَّبَعَهُمْ فِرْعَوْنُ بِجُنُودِهِ ۚ فَغَشِيَهُمْ مِنَ الْيَمِّ مَا غَشِيَهُمْ

फिरऔन ने अपने लश्कर समेत उनका पीछा किया फिर दरिया (के पानी का रेला) जैसा कुछ उन पर छाया गया वह छा गया

وَأَضَلَّ فِرْعَوْنُ قَوْمَهُ ۚ وَمَا هَدَىٰ

और फिरऔन ने अपनी क़ौम को गुमराह (करके हलाक) कर डाला और उनकी हिदायत न की

يَبْنِي إِسْرَءِيلَ قَدْ أَنْجَيْنَاكَ مِنْ عَدُوِّكَ ۖ وَوَعَدْنَاكَ جَانِبَ الطُّورِ الْأَيْمَنِ وَنَزَّلْنَا عَلَيْكَ الْمَنَّاءَ وَالسَّلْوَىٰ

ऐ बनी इसराइल हमने तुमको तुम्हारे दुश्मन (के पंजे) से छुड़ाया और तुम से (कोहेतूर) के दाहिने तरफ का वायदा किया और हम ही ने तुम पर मन व सलवा नाज़िल किया

كُلُوا ۚ مِنْ طَيِّبَاتِ مَا رَزَقْنَاكُمْ وَلَا تَطْغَوْا ۚ فِيهِ فَيَحِلَّ عَلَيْكُمْ غَضَبِي ۚ وَمَنْ يَحْلِلْ عَلَيْهِ غَضَبِي فَقَدْ هَوَىٰ

और (फ़रमाया) कि हमने जो पाक व पाकीज़ा रोज़ी तुम्हें दे रखी है उसमें से खाओ (पियो) और उसमें (किसी क़िस्म की) शरारत न करो वरना तुम पर मेरा अज़ाब नाज़िल हो जाएगा और (याद रखो कि) जिस पर मेरा अज़ाब नाज़िल हुआ तो वह यक्कीनन गुमराह (हलाक) हुआ

وَإِنِّي لَغَفَّارٌ ﴿٩﴾ لِّمَن تَابَ وَءَامَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا ﴿١٠﴾ ثُمَّ اهْتَدَىٰ

और जो शख्स तौबा करे और ईमान लाए और अच्छे काम करे फिर साबित कदम रहे तो हम उसको ज़रूर बख्शने वाले हैं

﴿٩﴾ وَمَا أَعْجَلَكَ عَنْ قَوْمِكَ يَمُوسَىٰ

फिर जब मूसा सत्तर आदमियों को लेकर चले और खुद बढ़ आए तो हमने कहा कि (ऐ मूसा तुमने अपनी क़ौम से आगे चलने में क्यों जल्दी की)

قَالَ هُمْ أُو۟لَآءِ عَلَىٰ أَثَرِي وَعَجِلْتُ إِلَيْكَ رَبِّ لِتَرْضَىٰ

गरज़ की वह भी तो मेरे ही पीछे चले आ रहे हैं और इसी लिए मैं जल्दी करके तेरे पास इसलिए आगे बढ़ आया हूँ ताकि तू (मुझसे) खुश रहे

قَالَ فَإِنَّا قَدْ فَتَنَّا قَوْمَكَ مِنۢ بَعْدِكَ وَأَضَلَّهُمُ السَّامِرِيُّ

फ़रमाया तो हमने तुम्हारे (आने के बाद) तुम्हारी क़ौम का इम्तिहान लिया और सामरी ने उनको गुमराह कर छोड़ा

فَرَجَعَ مُوسَىٰ إِلَىٰ قَوْمِهِ ﴿٩﴾ غَضِبْنَ أَسِفًا ﴿١٠﴾ قَالَ يَقَوْمِ أَلَمْ يَعِدْكُمْ رَبُّكُمْ وَعَدًّا حَسَنًا ﴿١﴾ أَفَطَالَ عَلَيْكُمُ الْعَهْدُ أَمْ أَرَدْتُمْ أَن يَحِلَّ عَلَيْكُمْ غَضَبٌ ﴿٢﴾ مِّن رَّبِّكُمْ فَأَخْلَفْتُم مَّوْعِدِي

(तो मूसा) गुस्से में भरे पछताए हुए अपनी क़ौम की तरफ पलटे और आकर कहने लगे ऐ मेरी (क़म्बख्त) क़ौम क्या तुमसे तुम्हारे परवरदिगार ने एक अच्छा वायदा (तौरेत देने का) न किया था तुम्हारे वायदे में अरसा लग गया या तुमने ये चाहा कि तुम पर तुम्हारे परवरदिगार का ग़ज़ब टूट पड़े कि तुमने मेरे वायदे (खुदा की परसतिश) के खिलाफ किया

قَالُوا ﴿١﴾ مَا أَخْلَفْنَا مَوْعِدَكَ بِمَلَكِنَا وَلَكِنَّا حُمِّلْنَا أَوْزَارًا ﴿٢﴾ مِّن زِينَةِ الْقَوْمِ فَقَذَفْنَاهَا فَكَذَلِكَ أَلْقَى السَّامِرِيُّ

वह लोग कहने लगे हमने आपके वायदे के खिलाफ नहीं किया बल्कि (बात ये हुई कि फिरऔन की) क़ौम के ज़ेवर के बोझों जो (मिस्र से निकलते वक्त) हम पर लगे गए थे उनको हम लोगों ने (सामरी के कहने से आगे में) डाल दिया फिर सामरी ने भी डाल दिया

فَأَخْرَجَ لَهُمْ عِجْلًا ۖ جَسَدًا ۖ لَهُ ۖ خُورًا ۖ فَقَالُوا ۖ هَذَا إِلَهُكُمْ وَإِلَهُ مُوسَىٰ فَنَسِيَ

फिर सामरी ने उन लोगों के लिए (उसी जेवर से) एक बछड़े की मूरत बनाई जिसकी आवाज़ भी बछड़े की सी थी उस पर बाज़ लोग कहने लगे यही तुम्हारा (भी) माबूद और मूसा का (भी) माबूद है मगर वह भूल गया है

أَفَلَا يَرَوْنَ إِلَّا يَرْجِعُ إِلَيْهِمْ قَوْلًا ۖ وَلَا يَمْلِكُ لَهُمْ ضَرًّا ۖ وَلَا نَفْعًا ۖ

भला इनको इतनी भी न सूझी कि ये बछड़ा न तो उन लोगों को पलट कर उन की बात का जवाब ही देता है और न उनका ज़रर ही उस के हाथ में है और न नफ़ा

وَلَقَدْ قَالَ لَهُمْ هَارُونُ مِنْ قَبْلُ يُقَوْمُ إِنَّمَا فُتِنْتُمْ بِهِ ۖ وَإِنَّ رَبَّكُمُ الرَّحْمَنُ فَاتَّبِعُونِي وَأَطِيعُوا ۖ أَمْرِي

और हारून ने उनसे पहले कहा भी था कि ऐ मेरी क्रौम तुम्हारा सिर्फ़ इसके ज़रिये से इम्तिहान किया जा रहा है और इसमें शक नहीं कि तम्हारा परवरदिगार (बस खुदाए रहमान है) तो तुम मेरी पैरवी करो और मेरा कहा मानो

قَالُوا ۖ لَنْ نَبْرَحَ عَلَيْهِ عُكِفِينَ حَتَّىٰ يَرْجِعَ إِلَيْنَا مُوسَىٰ

तो वह लोग कहने लगे जब तक मूसा हमारे पास पलट कर न आएँ हम तो बराबर इसकी परसतिश पर डटे बैठे रहेंगे

قَالَ يَهُرُونَ مَا مَنَعَكَ إِذْ رَأَيْتَهُمْ ضَلُّوا ۖ

मूसा ने हारून की तरफ़ खिताब करके कहा ऐ हारून जब तुमने उनको देख लिया था गमुराह हो गए हैं तो तुम्हें मेरी पैरवी (क्रताल) करने को किसने मना किया

أَلَّا تَتَّبِعَنِ ۖ أَفَعَصَيْتَ أَمْرِي

तो क्या तुमने मेरे हुक्म की नाफ़रमानी की

قَالَ يَبْنَؤُمْ لَا تَأْخُذْ بِلِحْيَتِي وَلَا بِرَأْسِي ۚ إِنِّي خَشِيتُ أَنْ تَقُولَ فَرَّقْتَ بَيْنَ بَنِي  
إِسْرَءِيلَ وَلَمْ تَرْقُبْ قَوْلِي

हारून ने कहा ऐ मेरे माँजाए (भाई) मेरी दाढ़ी न पकड़िए और न मेरे सर (के बाल) मैं तो उससे डरा कि (कहीं) आप (वापस आकर) ये (न) कहिए कि तुमने बनी इसराईल में फूट डाल दी और मेरी बात का भी ख्याल न रखा

قَالَ فَمَا خَطْبُكَ يُسْمِرِي

तब सामरी से कहने लगे कि ओ सामरी तेरा क्या हाल है

قَالَ بَصُرْتُ بِمَا لَمْ يَبْصُرُوا ۚ بِهِ ۚ فَقَبَضْتُ قَبْضَةً ۚ مِّنْ أَثَرِ الرَّسُولِ فَنَبَذْتُهَا  
وَكَذَلِكَ سَوَّلَتْ لِي نَفْسِي

उसने (जवाब में) कहा मुझे वह चीज़ दिखाई दी जो औरों को न सूझी (जिबरील घोड़े पर सवार जा रहे थे) तो मैंने जिबरील फरिश्ते (के घोड़े) के निशाने क़दम की एक मुट्ठी (खाक) की उठा ली फिर मैंने (बछड़ों के क़ालिब में) डाल दी (तो वह बोलने लगा

قَالَ فَأَذْهَبُ فَإِنَّ لَكَ فِي الْحَيَوةِ أَنْ تَقُولَ لَا مِسَاسَ ۚ وَإِنَّ لَكَ مَوْعِدًا ۚ اِنَّ  
تُخْلَفُهُ ۚ ۚ وَأَنْظُرْ إِلَى إِلْهِكَ الَّذِي ظَلْتَ عَلَيْهِ عَاكِفًا ۚ اِنَّ لَّنُحَرِّقَنَّهُ ۚ ۚ ثُمَّ لَنَنْسِفَنَّهُ ۚ ۚ  
فِي الْيَمِّ نَسْفًا

और उस वक्त मुझे मेरे नफ्स ने यही सुझाया मूसा ने कहा चल (दूर हो) तेरे लिए (इस दुनिया की) ज़िन्दगी में तो (ये सज़ा है) तू कहता फ़िरेगा कि मुझे न छूना (वरना बुखार चढ़ जाएगा) और (आखिरत में भी) यक़ीनी तेरे लिए (अज़ाब का) वायदा है कि हरगिज़ तुझसे ख़िलाफ़ न किया जाएगा और तू अपने माबूद को तो देख जिस (की इबादत) पर तू डट बैठा था कि हम उसे यक़ीनन जलाकर (राख) कर डालेंगे फिर हम उसे तित्तिर बित्तिर करके दरिया में उड़ा देंगे

إِنَّمَا إِلَهُكُمُ اللَّهُ الَّذِي لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ ۚ وَسِعَ كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا ۚ ا

तुम्हारा माबूद तो बस वही खुदा है जिसके सिवा कोई और माबूद बरहक़ नहीं कि उसका इल्म हर चीज़ पर छा गया है

كَذَلِكَ نَقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ أَنْبَاءِ مَا قَدْ سَبَقَ ۙ وَقَدْ آتَيْنَاكَ مِنْ لَدُنَّا ذِكْرًا ۚ

(ऐ रसूल) हम तुम्हारे सामने यूँ वाक़ेयात बयान करते हैं जो गुज़र चुके और हमने ही तुम्हारे पास अपनी बारगाह से कुरान अता किया

مَنْ أَعْرَضَ عَنْهُ فَإِنَّهُ ۙ يَحْمِلُ يَوْمَ الْقِيَمَةِ وِزْرًا

जिसने उससे मुँह फेरा वह क़यामत के दिन यक़ीनन (अपने बुरे आमाल का) बोझ उठाएगा

خَلِيدِينَ فِيهِ ۙ وَسَاءَ لَهُمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ حِمْلًا ۚ

और उसी हाल में हमेशा रहेंगे और क्या ही बुरा बोझ है क़यामत के दिन ये लोग उठाए होंगे

يَوْمَ يُنْفَخُ فِي الصُّورِ ۙ وَنَحْشُرُ الْمُجْرِمِينَ يَوْمَئِذٍ زُرْقًا ۚ

जिस दिन सूर फूँका जाएगा और हम उस दिन गुनाहगारों को (उनकी) आँखें पुतली (अन्धी) करके (आमने-सामने) जमा करेंगे

يَتَخَفَتُونَ بَيْنَهُمْ إِنْ لَبِثْتُمْ إِلَّا عَشْرًا ۚ

(और) आपस में चुपके-चुपके कहते होंगे कि (दुनिया या क़ब्र में) हम लोग (बहुत से बहुत) नौ दस दिन ठहरे होंगे

نَحْنُ أَعْلَمُ بِمَا يَقُولُونَ إِذْ يَقُولُ أَمْثَلُهُمْ طَرِيقَةً إِنْ لَبِثْتُمْ إِلَّا يَوْمًا ۚ

जो कुछ ये लोग (उस दिन) कहेंगे हम खूब जानते हैं कि जो इनमें सबसे ज्यादा होशियार होगा बोल उठेगा कि तुम बस (बहुत से बहुत) एक दिन ठहरे होंगे

وَيَسْأَلُونَكَ عَنِ الْجِبَالِ فَقُلْ يَنْسِفُهَا رَبِّي نَسْفًا ۚ

(और ऐ रसूल) तुम से लोग पहाड़ों के बारे में पूछा करते हैं (कि क़यामत के रोज़ क्या होगा)

فَيَذَرُهَا قَاعًا ۚ صَفْصَفًا ۚ

तो तुम कह दो कि मेरा परवरदिगार बिल्कुल रेज़ा रेज़ा करके उड़ा डालेगा और ज़मीन को एक चटियल मैदान कर छोड़ेगा

لَا تَرَىٰ فِيهَا عِوَجًا ۖ وَلَا أَمْتًا ۚ

कि (ऐ शख्स) न तो उसमें मोड़ देखेगा और न ऊँच-नीच

يَوْمَئِذٍ ۚ يَتَّبِعُونَ الدَّاعِيَ لَا عِوَجَ لَهُ ۖ وَخَشَعَتِ الْأَصْوَاتُ لِلرَّحْمَنِ فَلَا تَسْمَعُ إِلَّا هَمْسًا ۚ

उस दिन लोग एक पुकारने वाले इसराफ़ील की आवाज़ के पीछे (इस तरह सीधे) दौड़ पड़ेंगे कि उसमें कुछ भी कज़ी न होगी और आवाज़ें उस दिन खुदा के सामने (इस तरह) धिधियाएंगें कि तू धुनधुनाहट के सिवा और कुछ न सुनेगा

يَوْمَئِذٍ ۚ لَا تَنفَعُ الشَّفَعَةُ إِلَّا مَنْ أَذِنَ لَهُ الرَّحْمَنُ وَرَضِيَ لَهُ ۚ قَوْلًا ۚ

उस दिन किसी की सिफ़ारिश काम न आएगी मगर जिसको खुदा ने इजाज़त दी हो और उसका बोलना पसन्द करे जो कुछ उन लोगों के सामने है और जो कुछ उनके पीछे है

يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَلَا يُحِيطُونَ بِهِ ۚ عِلْمًا ۚ

(गरज़ सब कुछ) वह जानता है और ये लोग अपने इल्म से उसपर हावी नहीं हो सकते

ۚ وَعَنْتِ الْأُجُوهُ لِلْحَيِّ الْقَيُّومِ ۚ وَقَدْ خَابَ مَنْ حَمَلَ ظُلْمًا ۚ

और (क्रयामत में) सारी (खुदाई के) का मुँह ज़िन्दा और बाक़ी रहने वाले खुदा के सामने झुक जाएँगे और जिसने जुल्म का बोझ (अपने सर पर) उठाया वह यक़ीनन नाकाम रहा

وَمَنْ يَعْمَلْ مِنَ الصَّالِحَاتِ وَهُوَ مُؤْمِنٌ ۚ فَلَا يَخَافُ ظُلْمًا ۚ وَلَا هَضْمًا ۚ

और जिसने अच्छे-अच्छे काम किए और वह मोमिन भी है तो उसको न किसी तरह की बेइन्साफ़ी का डर है और न किसी नुक़सान का

وَكَذَلِكَ أَنْزَلْنَاهُ قُرْآنًا عَرَبِيًّا ۖ وَصَرَّفْنَا فِيهِ مِنَ الْوَعِيدِ لَعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ أَوْ يُحْدِثُ لَهُمْ ذِكْرًا ۚ

हमने उसको उसी तरह अरबी ज़बान का कुरान नाज़िल फ़रमाया और उसमें अज़ाब के तरह-तरह के वायदे बयान किए ताकि ये लोग परहेज़गार बनें या उनके मिजाज़ में इबरत पैदा कर दे

فَتَعَلَىٰ اللَّهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ ۚ وَلَا تَعْجَلْ بِالْقُرْآنِ مِنْ قَبْلِ أَنْ يُقْضَىٰ إِلَيْكَ وَحْيُهُ ۚ وَقُل رَّبِّ زِدْنِي عِلْمًا ۚ

पस (दो जहाँ का) सच्चा बादशाह खुदा बरतर व आला है और (ऐ रसूल) कुरान के (पढ़ने) में उससे पहले कि तुम पर उसकी "वही" पूरी कर दी जाए जल्दी न करो और दुआ करो कि ऐ मेरे पालने वाले मेरे इल्म को और ज्यादा फ़रमा

وَلَقَدْ عَهِدْنَا إِلَىٰ آدَمَ مِنْ قَبْلُ فَنَسَىٰ وَلَمْ نَجِدْ لَهُ ۙ عَزْمًا ۚ

और हमने आदम से पहले ही एहद ले लिया था कि उस दरख्त के पास न जाना तो आदम ने उसे तर्क कर दिया

وَإِذْ قُلْنَا لِلْمَلَائِكَةِ اسْجُدُوا لِآدَمَ فَسَجَدُوا ۖ إِلَّا إِبْلِيسَ أَبَىٰ

और हमने उनमें साबित व इस्तक़लाल न पाया और जब हमने फ़रिश्तों से कहा कि आदम को सजदा करो तो सबने सजदा किया मगर शैतान ने इन्कार किया

فَقُلْنَا يَا آدَمُ إِنَّ هَذَا عَدُوٌّ ۖ لَكَ وَلِزَوْجِكَ فَلَا يُخْرِجَنَّكَ مِنَ الْجَنَّةِ فَتَشْقَىٰ

तो मैंने (आदम से कहा) कि ऐ आदम ये यक़ीनी तुम्हारा और तुम्हारी बीवी का दुश्मन है तो कहीं तुम दोनों को बेहिश्त से निकलवा न छोड़े तो तुम (दुनिया की) मुसीबत में फँस जाओ

إِنَّ لَكَ أَلَّا تَجُوعَ فِيهَا وَلَا تَعْرَىٰ

कुछ शक नहीं कि (बेहिश्त में) तुम्हें ये आराम है कि न तो तुम यहाँ भूके रहोगे और न नंगे

وَأَنَّكَ لَا تَظْمَأُ<sup>❶</sup> فِيهَا وَلَا تَضْحَى

और न यहाँ प्यासे रहोगे और न धूप खाओगे

فَوَسْوَسَ إِلَيْهِ الشَّيْطَانُ قَالَ يَٰآدَمُ هَلْ أَدُلُّكَ عَلَى شَجَرَةِ الْخُلْدِ وَمُلْكٍ<sup>❶</sup> لَا يَبْلَى

तो शैतान ने उनके दिल में वसवसा डाला (और) कहा ऐ आदम क्या मैं तम्हें (हमेशगी की ज़िन्दगी) का दरख्त और वह सल्तनत जो कभी ज़ाएल न हो बता दूँ

فَأَكَلَا مِنْهَا فَبَدَتْ لَهُمَا سَوْءَاتُهُمَا وَطَفِقَا يَخْصِفَانِ عَلَيْهِمَا مِنْ وَرَقِ الْجَنَّةِ<sup>❶</sup> وَعَصَى<sup>❶</sup> آدَمُ رَبَّهُ<sup>❶</sup> فَغَوَى

चुनान्चे दोनों मियाँ बीबी ने उसी में से कुछ खाया तो उनका आगा पीछा उनपर ज़ाहिर हो गया और दोनों बेहिश्त के (दरख्त के) पत्ते अपने आगे पीछे पर चिपकाने लगे और आदम ने अपने परवरदिगार की नाफ़रमानी की

ثُمَّ أُجْتَبِهُ رَبُّهُ<sup>❶</sup> فَتَابَ عَلَيْهِ وَهَدَى

तो (राहे सवाब से) बेराह हो गए इसके बाद उनके परवरदिगार ने बर गुज़ीदा किया

قَالَ أَهْبِطَا مِنْهَا جَمِيعًا<sup>❶</sup> ۚ بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ<sup>❶</sup> ۚ فَإِمَّا يَأْتِيَنَّكُمْ مِنِّي هُدًى<sup>❶</sup> فَمَنِ اتَّبَعَ هُدَايَ فَلَا يَضِلُّ وَلَا يَشْقَى

फिर उनकी तौबा कुबूल की और उनकी हिदायत की फरमाया कि तुम दोनों बेहश्त से नीचे उतर जाओ तुम में से एक का एक दुश्मन है फिर अगर तुम्हारे पास मेरी तरफ से हिदायत पहुँचे तो (तुम) उसकी पैरवी करना क्योंकि जो शख्स मेरी हिदायत पर चलेगा न तो गुमराह होगा और न मुसीबत में फँसेगा

وَمَنْ أَعْرَضَ عَن ذِكْرِي فَإِنَّ لَهُ<sup>❶</sup> مَعِيشَةً<sup>❶</sup> ضَنْكًا<sup>❶</sup> ۚ وَنَحْشُرُهُ<sup>❶</sup> يَوْمَ الْقِيَمَةِ أَعْمَى

और जिस शख्स ने मेरी याद से मुँह फेरा तो उसकी ज़िन्दगी बहुत तंगी में बसर होगी और हम उसको क़यामत के दिन अंधा बना के उठाएँगे

قَالَ رَبِّ لِمَ حَشَرْتَنِيْ اَعْمٰى وَقَدْ كُنْتُ بَصِيْرًاۙ۱

वह कहेगा इलाही मैं तो (दुनिया में) आँख वाला था तूने मुझे अन्धा करके क्यों उठाया

قَالَ كَذٰلِكَ اَتٰتَكَ اٰیٰتُنَا فَنَسِيْتَهَا ۙ وَكَذٰلِكَ اَلْيَوْمَ تُنْسٰى

खुदा फरमाएगा ऐसा ही (होना चाहिए) हमारी आयतें भी तो तेरे पास आई तो तू उन्हें भुला बैठा और इसी तरह आज तू भी भूला दिया जाएगा

وَكَذٰلِكَ نَجْزِيْ مَنْ اَسْرَفَ وَلَمْ يُؤْمِنْ ۙ بِآيٰتِ رَبِّهِۦ ۙ ۙ وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَشَدُّ  
وَابْقٰى

और जिसने (हद से) तज्जाविज़ किया और अपने परवरदिगार की आयतों पर ईमान न लाया उसको ऐसी ही बदला देगें और आखिरत का अज़ाब तो यक़ीनी बहुत सख्त और बहुत देर पा है

اَفَلَمْ يَهْدِ لَهُمْ كَمْ اٰهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنَ الْقُرُوْنِ يَمْشُوْنَ فِيْ مَسٰكِنِهِمْ ۙ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ  
لَآٰیٰتٍ ۙ لِّاُو۟لٰى النُّهٰى

तो क्या उन (अहले मक्का) को उस (खुदा) ने ये नहीं बता दिया था कि हमने उनके पहले कितने लोगों को हलाक कर डाला जिनके घरों में ये लोग चलते फिरते हैं इसमें शक नहीं कि उसमें अक्लमंदों के लिए (कुदरते खुदा की) यक़ीनी बहुत सी निशानियाँ हैं

وَلَوْ لَا كَلِمَةٌ ۙ سَبَقَتْ مِنْ رَبِّكَ لَكَانَ لِزَامًا ۙ ۙ وَاَجَلٌ ۙ مُّسَمًّى ۙ۱

और (ऐ रसूल) अगर तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से पहले ही एक वायदा और अज़ाब का) एक वक्त मुअय्युन न होता तो (उनकी हरकतों से) फ़ौरन अज़ाब का आना लाज़मी बात थी

فَأَصْبِرْ عَلَىٰ مَا يَقُولُونَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوعِ الشَّمْسِ وَقَبْلَ غُرُوبِهَا ۚ  
وَمِنْ عَآئِ اللَّيْلِ فَسَبِّحْ وَأَطْرَافَ النَّهَارِ لَعَلَّكَ تَرْضَىٰ

(ऐ रसूल) जो कुछ ये कुफ़्कार बका करते हैं तुम उस पर सब्र करो और आफ़ताब निकलने के क़बल और उसके ग़ुरूब होने के क़बल अपने परवरदिगार की हम्दोसना के साथ तसबीह किया करो और कुछ रात के वक़्तों में और दिन के किनारों में तस्बीह करो ताकि तुम निहाल हो जाओ

وَلَا تَمُدَّنَّ عَيْنَيْكَ إِلَىٰ مَا مَتَّعْنَا بِهِ ۖ أَزْوَاجًا ۚ مِّنْهُمْ زَهْرَةَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا لِنَفْتِنَهُمْ  
فِيهِ ۚ وَرِزْقُ رَبِّكَ خَيْرٌ ۚ وَأَبْقَىٰ

और (ऐ रसूल) जो उनमें से कुछ लोगों को दुनिया की इस ज़रा सी ज़िन्दगी की रौनक से निहाल कर दिया है ताकि हम उनको उसमें आज़माएँ तुम अपनी नज़रें उधर न बढ़ाओ और (इससे) तुम्हारे परवरदिगार की रोज़ी (सवाब) कहीं बेहतर और ज्यादा पाएदार है

وَأْمُرْ أَهْلَكَ بِالصَّلَاةِ وَاصْطَبِرْ عَلَيْهَا ۚ لَا نَسْأَلُكَ رِزْقًا ۚ إِنَّا نَحْنُ نَرْزُقُكَ ۚ وَالْعُقْبَةُ  
لِلتَّقْوَىٰ

और अपने घर वालों को नमाज़ का हुक्म दो और तुम खुद भी उसके पाबन्द रहो हम तुम से रोज़ी तो तलब करते नहीं (बल्कि) हम तो खुद तुमको रोज़ी देते हैं और परहेज़गारी ही का तो अन्जाम बख़ैर है

وَقَالُوا ۚ لَوْلَا يَأْتِينَا بِآيَةٍ ۚ مِّن رَّبِّهِ ۚ ۚ أَوَلَمْ تَأْتِهِم بَيِّنَةٌ مَّا فِي الصُّحُفِ الْأُولَىٰ

और (अहले मक्का) कहते हैं कि अपने परवरदिगार की तरफ से हमारे पास कोई मौजिज़ा हमारी मज़ी के मुवाफ़िक़ क्यों नहीं लाते तो क्या जो (पेशीव गोइयाँ) अगली किताबों (तौरत, इन्ज़ील) में (इसकी) गवाह हैं वह भी उनके पास नहीं पहुँची

وَلَوْ أَنَّا أَهْلَكْنَاهُمْ بِعَذَابٍ ۚ مِّن قَبْلِهِ ۚ لَقَالُوا ۚ رَبَّنَا لَوْلَا أَرْسَلْتَ إِلَيْنَا رَسُولًا ۚ ۚ فَتَتَّبَعَ  
ءَايَتِكَ مِن قَبْلِ أَنْ نَّذِلَّ وَنَخْزَىٰ

और अगर हम उनको इस रसूल से पहले अज़ाब से हलाक कर डालते तो ज़रूर कहते कि ऐ हमारे पालने वाले तूने हमारे पास (अपना) रसूल क्यों न भेजा तो हम अपने ज़लील व रूसवा होने से पहले तेरी आयतों की पैरवी ज़रूर करते

قُلْ كُلُّ مُتَرَبِّصٍ ۚ فَتَرَبَّصُوا ۚ ۚ فَسَتَعْلَمُونَ مَنْ أَصْحَابُ الصِّرَاطِ السَّوِيِّ وَمَنِ اهْتَدَى

रसूल तुम कह दो कि हर शख्स (अपने अन्जामकार का) मुन्तिज़र है तो तुम भी इन्तिज़ार करो फिर तो तुम्हें बहुत जल्द मालूम हो जाएगा कि सीधी राह वाले कौन हैं (और कज़ी पर कौन हैं) हिदायत याफ़ता कौन है और गुमराह कौन है।